दिनांक 12 नवम्बर, 1979 को दतिया, मध्य प्रदेश में जनसभा में प्रधान मंत्री श्री चरण सिंह का भाषण।

———————————————

बहनों और भाइयों,

आज, ये मेरा पहला मौका है, आपके इस इलाके में आने का। मैं बहुत–– मुझको प्रसन्नता हुई है, मुझको बहुत–आप लोगों को देखकर इस बड़ी तादाद में और धूप में बैठे हुए घण्टे दो घण्टे से। अब मैं ये चाहता हूं कि आप लोग शांति से मेरी बात सुनो और अगर हो सकता हो, तो, बैठ जाओ। आप जो एक–दूसरे से सटे हुए खड़े हो, ये मैं जानता हूं कि बैठने में आपको उसी जगह तकलीफ होगी। अगर, पीछे वाले कुछ पीछे को हटते चले जाएं तो बैठने में आसानी होगी। वैसे मैं 40 मिनट से ज्यादा आपका लेना नहीं चाहता। तो, खड़े होकर भी सुन सकते हो। लेकिन, आपस में बात मत करो–

दोस्तों, जब अंग्रेजों का यहां जमाना था, तो मेरी पीढ़ी के लोग गांधी जी के नेतृत्व में देश की आजादी के लिए लड़ रहे थे। अपने देश के लिए तरह–तरह के सपने देखा करते थे कि हम अपने देश को गौरवशाली बना देंगे, मालदार बना देंगे और शक्तिशाली बना देंगे। इसको फिर से हिमालय की चोटी पर बिठा देंगे। लेकिन अफसोस की बात है कि हमारे वो सारे सपने भंग हो गए। आज दुनिया में यह देश सबसे अधिक गरीब देशों में से एक है।

इंदिरा जी ने जब राज संभाला था, उससे एक साल पहले 64–65 में 140 देशों में हमारे देश का नम्बर था 85वां। 84 देश हमसे मालदार थे और 40 देश हमसे गरीब थे। उनके राज के 8 साल के बाद सन् 1973 में हमारे देश का नम्बर था 104 वां। 103 देश हमसे मालदार और 21 देश हमसे गरीब और 3 साल बाद सन् 76 में हम 8 पोजीशन और नीचे खिसक गए। आज हमारा नम्बर है 111वां, 110 देश मालदार और 14 देश गरीब। तो, यही नहीं कि हम गरीब हैं। अफसोस और तकलीफ इस बात की ज्यादा है कि हम और गरीब होते जा रहे हैं, गरीबतर होते जा रहे हैं।

आज हमारे यहां 100 में से 48 आदमियों को पूरा भोजन भी खाने को नहीं मिलता। वे लोग अधिकतर गांव में रहते हैं, क्योंकि हमारा देश ही गांव में रहता है। लेकिन, शहर में भी बहुत से गरीब आदमी हैं; ये दिल्ली, जो आपको बड़ा भारी मालदार शहर ... ये सबसे मालदार शहर .. दिल्ली। इसमें भी 100 के पीछे 26 आदमी इतने गरीब हैं।

आज हमारे बच्चों को दूध पीने को नहीं मिलता। अंग्रेजों के जमाने में भी कम मिलता था, लेकिन आज तो उतना भी नहीं मिलता और बच्चों के लिए या बीमार के लिए दूध एक दवा और औषधि बनकर रह गई है, इतना कम मिलता है। तो ये तो हमारी गरीबी का हाल है।

दूसरी बात ये है कि बेरोजगारी बढ़ती जा रही है, शहर में भी गांव में भी। शहर में भी पढ़े–लिखे लड़के बी0ए0 और एम0ए0 पास और एम.एस.सी. पास और डाक्टरी और इंजीनियरिंग पास मारे–मारे फिरते हैं। आज एक करोड़ 40 लाख लोगों का नाम काम दिलाऊ दफ्तर में दर्ज हैं। शहर के अन्दर, हिन्दुस्तान के सारे शहरों में, जो हमारे लड़के काम चाहते हैं, पढ़ने दूसरे देशों में चले जाते हैं, वहां से वापस नहीं आते। क्योंकि यहां रोजगार नहीं मिलता, वहीं बस जाते हैं। यहां से भी पढ़े–लिखे लड़के .. यहां रोजगार नहीं मिलता, विद्या

यहां हासिल करेंगे, शिक्षा अपनी यहां पूरी करेंगे, दूसरे देश को जाते हैं रोजगार के लिए, ये तो शहर का हाल है। गांव का हाल उससे भी बदतर है।

सन् 70–71 में गवर्नमेंट ऑफ इंडिया की तरफ से, भारत सरकार की तरफ से एक गणना की गई थी कि कितनी जमीन कितने लोगों के पास, कितनी–कितनी जमीन है और उसमें कितने रकबे में ईख होती है, कपास होती है, गेहूं होता है, ज्वार होता है, तम्बाकू होता है– ये सब हिसाब लगाया गया था और कितने में सिंचाई है, कितने में सिंचाई नहीं है। और, अगर सिंचाई है तो नहर से कितने में है, कुंए से कितने में है, ट्यूबवेल से कितने में है। यह हिसाब लगाया गया। तो उसको देखने से पता चलता है कि हमारे गांव के किसानों में एक तिहाई किसानों के पास दो बीघे से कम जमीन थी। यह बात कह रहा हूं 9 या 10 साल पहले की। एक तिहाई किसानों के पास, जो किसान समझे जाते हैं, उनके पास दो बीघे से कम जमीन। 18 किसानों के पास–100 में से 18 किसानों के पास 2 बीघे से ज्यादा और 4 बीघे से कम और 19 किसानों के पास 4 बीघे से ज्यादे और 8 बीघे से कम। 33 और 18 बराबर 51। 51 और 19 बराबर 70। तो 70 किसान ऐसे हैं जिनको मैं नाममात्र का किसान समझता हूं। उनकी गुजर नहीं हो सकती, इतनी थोड़ी जमीन उनके पास है। आप लोग मेरे सामने बैठे हो, मैं आपके चेहरे देखकर बता सकता हूं कि ये इलाका बहुत गरीब है।

मैं एक मामूली किसान के घर पैदा हुआ हूं। मेरे पिताजी और मेरे ताऊ वगैरह 4–5 भाई थे। सगे भाई थे। वो काश्तकार थे। अपनी जमीन के मालिक नहीं थे। बुलन्दशहर में कुचेसर का जमींदार बहुत बड़ा जमींदार कहलाता था, उसके भी काश्तकार थे। अब से 50 साल पहले जो मेरे खानदान के लोग थे, जो मेरे चचा जात भाई, मेरे भाई, वगैरह सब, उनके मुकाबले में आज जो मेरे पोते–पढ़पोते हो गए हैं, वो आज गरीब हैं 50 साल पहले के मुकाबले में। क्योंकि तब जमीन मेरे पिताजी और ताऊ वगैरह के पास 10–10 एकड़ आती थी। अब उनके पोतों के पास दो–दो एकड़ जमीन रह गई है। उनके चेहरे पे न वो रौनक है, ना वो सुर्खी है, ना ही जिस्म में जान है, ना बैल उतने अच्छे हैं, जितने कि पहले थे। ना गाय और भैंस उतना दूध देती हैं, जितना पहले देती थीं। ना बहू–बेटियों के पास उतने अच्छे कपड़े हैं और ना उनका स्वास्थ्य अच्छा है।

तो किसानों की हालत बिगड़ती जाती है, क्योंकि जमीन तो बढ़ेगी नहीं, औलाद बढ़ती जाती है और दूसरा पेशा यहां के लोगों को करने को रहा नहीं बल्कि, जो दूसरे पेशे अंग्रेजों के आने से पहले गांव में हुआ करते थे, वो सब बर्बाद कर दिए अंग्रेजों ने। और अब हमारे लीडर, आजादी के बाद जो थोड़े बहुत बचे थे उनको बर्बाद करने पर लगे हुए हैं।

जमीन प्रकृति ने या इतिहास ने इस देश को जो दी थी वो बढ़ेगी नहीं, आबादी बढ़ेगी। तेज रफ्तार से न सही, धीमी रफ्तार से सही, तो दादा, परदादा के सामने जो जमीन थी उसी पर मैंड पर मैंड ठलकती जाती है। पहले 100 में से 17 आदमी मजदूर थे, खेतिहर मजदूर, जो किसानों की खेतों पर मजदूरी करते थे। अब 25.5 फीसदी मजदूर हैं, तो ये गांव का हाल, बेरोजगारी का।

अब, तीसरी बात जो बताना चाहता हूं मैं, इनका सबका इलाज बाद में बतलाऊंगा, अभी तो समस्यायें बतला रहा हूं। तीसरी बात जो है वो यह कि गरीब और अमीर का फर्क बढ़ता जा रहा है। गांव वाले का, शहर वाले का फर्क बढ़ता जा रहा है। खेती पर काम करने

वालों का और दूसरा पेशा करने वालों की आमदनी का फर्क, बजाए कम होने के और बढ़ता जा रहा है, चौड़ा होता जा रहा है।

अंग्रेजो के जमाने में हम यही कहा करते थे कि अंग्रेजों ने बड़े–बड़े सेठ पैदा कर दिए। पहले बड़े–बड़े सेठ नहीं थे, अब हम सेठों को घटायेंगे, इनकी तादाद कम करेंगे तो स्वराज हो जाएगा।

लेकिन, दोस्तों – अफसोस के और तकलीफ के साथ आपको बताना पड़ता है कि किसान की और गैर किसान की, शहर के रहने वालों की और गांव के रहने वालों की आमदनी में जो फर्क था, वो अब दूना हो गया, बजाए कम होने के। सन् 50–51 में अगर गांव वाले की या किसान की आमदनी 100 रू0 थी तो, शहर के रहने वाले की आमदनी, गरीबों को छोड़कर, वहां गरीब तो मैंने बताया कि 100 में से 40 गरीब हैं तो, औसत आमदनी 178 रूपये। वो ज्यादातर बड़े लोगों के पास थी। 100 और 178 मोटा– सा सम दो 100 और पौने दो सौ। एक और पौने दो का फर्क। लेकिन, आज अगर गांव वाले की आमदनी या किसान की आमदनी 100 रूपये है, तो , शहर वाले की आमदनी 346 रूपया है। यानि, साढ़े तीन सौ। अब एक और साढ़े तीन का फर्क है, पहले एक और पौने दो का फर्क था।

तो, गांववालों की उपेक्षा की गई है, खेती की उपेक्षा की गई है। इनकी तरफ से गफ्लत की है हमारे लीडरों ने। गांव की तरफ ध्यान नहीं दिया गया स्वराज होने के बाद। हां, वोट लेने के वक्त हमारी जरूरत थी और है। हमारे लिए तरह–तरह के लोग, तरह–तरह की बातें कहने वाले हैं। लेकिन मैं बात ईमानदारी की और सही बात आपको कह रहा हूं। मैं गरीब घर में पैदा हुआ हूं और मैं जानता हूं गरीबी की तकलीफें क्या होती हैं, गरीबों की समस्यायें क्या होती हैं और गांववालों का मनोविज्ञान क्या होता है।

तो, गरीब अमीर का फर्क बढ़ता जा रहा है। पहले जो सेठ थे वो कम थे। अब सेठ भी ज्यादा हो गए, उनकी आमदनी और ज्यादा बढ़ गई है स्वराज के बाद। मसलन, दो नाम बतलाए देता हूं, सबने नाम सुने होंगे, आप में जो पढ़े–लिखे लोग बैठे होंगे टाटा और बिरला का। टाटा की जायदाद सन् 50–51 में 1 सौ 16 करोड़ रूपये की थी। आज 11 सौ करोड़ की है। 9 गुना बढ़ गयी। 10 गुना। और बिरला की जायदाद उससे कम थी, 53 करोड़ थी। उसकी भी 11 सौ करोड़ हो गई। बहुत तेज रफ्तार से बढ़ा है बिरला। उसकी 19 गुना हो गई और इस तरह के बिरला और टाटा जैसे अनेक हो गए, पहले इतने नहीं थे।

तो, ये तीन समस्याएं हुई आर्थिक क्षेत्र में। हमारी गरीबी नहीं, हमारी बढ़ती हुई गरीबी, बढ़ती हुई बेरोजगारी, बढ़ता हुआ गरीब–अमीर का फर्क। और चौथी समस्या है देश के सामने रिश्वतखोरी और बेईमानी।

अंग्रेजों के जमाने में, जो कुछ कर्मचारी, वो भी छोटे कर्मचारी रिश्वत लेते थे। हम सोचा करते थे, जब स्वराज हो जाएगा हम रिश्वत को खत्म करेंगे। आज छोटे नहीं, कुछ ऐसे भी बड़े कर्मचारी हैं और अफसर हैं जो रिश्वत लेते हैं। लेकिन मैं उनको अधिक दोष नहीं देता। अधिक दोष बल्कि सारा दोष है राजनैतिक नेताओं पर। अंग्रेजों के जमाने में जो थोड़ा बहुत अख्तियार था, मिनिस्टरों को, कोई उनमें रिश्वत नहीं लेता था। आज हमारे मिनिस्टर मिल जायेंगे, चीफ मिनिस्टर मिल जाएंगे, सूबों में मिल जाएंगे, दिल्ली में मिल जाएंगे, जो रिश्वत लेते थे और आज भी ले रहे हैं।

अब, जब चीफ मिनिस्टर रिश्वत लेगा, मिनिस्टर, गृह मंत्री लेगा, चाहे वो मध्य प्रदेश का हो, चाहे उत्तर प्रदेश का हो, चाहे किसी सूबे का हो, चाहे दिल्ली का हो, तो ये देश तरक्की नहीं करेगा – फिर अफसरान भी लेंगे। अब अफसरान को वो किस मुंह से कह सकते हैं उनके खिलाफ कार्रवाई करने को, जब खुद बेईमान होंगे और मिनिस्टर की या किसी की भी बेईमानी अफसर से तो छिपेगी नहीं। अब उस अफसर ने, जो आपकी बेईमानी जानता है, जो आपकी तरफदारी को जानता है, जो आप– उनसे नाजायज कार्रवाई कराते हो, तो अफसरों की नाजायज कार्रवाई पर बेईमान मिनिस्टर कोई कार्रवाई करने का हक नहीं रख सकता, कर नहीं सकता – तालियां–। तो, धीरे–धीरे चारों तरफ बेईमानी फैलती जा रही है। बेईमानी इतनी फैल गयी है, और ईमानदारी इतनी कम रह गई है कि तुम लोग पंचायतों पर, चौपालों पर बैठकर, वकील लोग वकालत खाने में बैठकर जिक्र करते हैं कि फलां अफसर ईमानदार है, फलां लीडर ईमानदार है। इसका मतलब है कि बाकी बेईमान हैं। जिक्र तो उसी का किया जाता है जो कम रह जाए चीज, तो ईमानदारी कम रह गई हो तो ईमानदार लोगो का जिक्र किया जाता है। तो, देश बदकिस्मत, इस देश को बचाना है तो चारों समस्याओं को हल करना है।

अब, मैं आपसे जो राय मांगने के लिए आया हूं। आया हूं लोकदल की तरफ से। तीन पार्टियां आपके सामने राय मांगने आएंगी। एक तो लोकदल और जो लोग कांग्रेस को छोड़कर चले आए थे, इंदिरा को छोड़कर, वो भी अपने आप को कांग्रेस मैन कहते हैं, जो इंदिरा से नाराज थे, जो कुछ उसने ज्यादतियां की हैं, इंदिरा अपनी गलती नहीं मानती थी। शामिल वो भी थे उस वक्त इमरजेंसी में, जो हमारे कांग्रेस के लीडर, जो हमारे साथ हैं, चिमन भाई वगैरह। लेकिन, वो ये महसूस करते थे कि गलती हुई, हमसे पाप हुआ, इंदिरा इस पाप को मानने के लिए तैयार नहीं थी। तो, वो छोड़ के चले आए, तो ऐसे ईमानदार कांग्रेसी एक हमारे साथ हैं और हम लोकदल वाले पुराने लोग हैं– लोकदल है, वो लोकदल–कांग्रेस संगठन की तरफ से राय मानने आएंगे। और जनता पार्टी जिसमें जनसंघ का सबसे बड़ा हाथ है, वो लोग वोट मांगने आएंगे और इंदिरा आएंगी वोट मांगने के लिए।

आपको यह तय करना है कि किस को वोट दें। मुल्क की जो किस्मत है किसके हाथ में है, किन लोगों के हाथ में सुपुर्द करें। मेरा मशविरा ये है कि इन चारों बीमारियों का ईलाज लोकदल के पास है। इसलिए लोकदल और कांग्रेस संगठन को आप वोट दो– तालियां –– और उनको मत दो, वो लोग जिम्मेदार हैं इस सारे देश की हालत के लिए आज।

और मेरे पास कोई नई बात नहीं है किसानों कहने के लिए। मैं सिर्फ वो ही बताना चाहता हूं जो कि, और यही मैं कहता रहा हूं, आज से नहीं–सन् 57 से, जब मैं मिनिस्टर था यू.पी. में। मैं अपने तजुर्बे के बाद इस नतीजे पर पहुंचा कि गांधी का बताया हुआ रास्ता सही था। गांधी जी दो बात कहते थे– एक तो यह कि, हिन्दुस्तान बम्बई और दिल्ली में नहीं रहता, गांव में रहता है, खेती करता है, इसलिए खेत की पैदावार बढ़ाने पर जोर दो।

दूसरी बात, वो ये कहते थे कि जो दस्तकारियां हैं, छोटे–छोटे रोजगार हैं, जो गांव और कस्बे में होते थे, उन रोजगारों को जगाओ, तब जाकर लड़कों को रोजगार मिलेगा। वरना आबादी बढ़ती जाएगी, जमीन ज्यादा नहीं है। बड़े कारखाने मत लगाओ, जहां तक बन सके। बड़े काखाने की कुछ की जरूरत होगी, बिना उनके काम नहीं चलेगा, लेकिन उनका कहना ये था कि बड़े कारखाने कम लगाओ। जहां तक मुमकिन है, वहां तक कम लगाओ।

हवाई जहाज बनाने को, फौज का सामान बनाने को, टैंक और गोला, बारूद आदि बनाने को और बिजली पैदा करने को, स्टील बनाने को या इस्पात – फौलाद बनाने को, रेल का इंजन बनाने को, मोटर बनाने को और बहुत–सी चीजों के लिए बड़े कारखानों की जरूरत पड़ेगी। लेकिन, जो काम हाथ से हो सकता है, उसके बनाने के लिए बड़े कारखाने मत लगाओ। वरना बड़े–बड़े सेठ और पूंजीपति पैदा हो जाएंगे और जितना बड़ी मशीन से काम होगा, उतना लड़कों में बेरोजगारी फैल जाएगी।

तो, गांधी जुलाहे के घर तो नहीं पैदा हुए थे, एक राजा के दीवान के लड़के थे। बड़े घर में पैदा हुए थे। बैरिस्ट्री पास करके आए थे इंग्लैंड से, बैरिस्ट्री करते थे। लेकिन, जब देश की समस्याओं पर उन्होंने विचार किया, बैरिस्ट्री छोड़ के चरखा और करघा लेकर बैठ गए, हमको सिखाने के लिए कि अमरीका की और इंग्लैंड की नकल मत करना। जहां बड़े–बड़े फार्म हैं, आदमी कम हैं जमीन ज्यादा है, लोहा और कोयला और तेल ज्यादा है। वहां बड़े फार्म भी होंगे, बड़े कारखानें भी लगेंगे। यहां हमारी औलाद बहुत ज्यादा है, जमीन कम है, तो थोड़ी–थोड़ी जमीन सब पे आएगी, ज्यादा बड़ी–बड़ी जमीन नहीं होनी चाहिए लोगों के पास, बड़े फार्म नहीं होंगे और बड़े कारखाने भी नहीं होने चाहिए। गांधी जी ये सीधी सी दो बात कहते थे और वो मैं कह ही चुका कि गांव में ज्यादा लोग रहते हैं, तो गांधी जी का कहना था कि खेत की पैदावार बढ़ाने पर जोर दो।

दोस्तों, जब अंग्रेज आया था तो 100 में 60 आदमी खेती करते थे, आज 72 करते हैं। जब अंग्रेज आया था तब 25 फीसदी आदमी गांव में दस्तकारी में लगे हुए थे। दियासलाई बनाने पर, साबुन बनाने पर, कपड़ा बनाने पर, कालीन बनाने पर, बर्तन बनाने पर, चाय के बर्तन बनाने –– हजार तरह के काम थे। 100 में 25 दस्तकार और 60 किसान थे और 15 और काम करते थे – तिजारत का, ढोने–ढाने का सामान का। अब क्या है? दस्तकारी खत्म हो गई, अंग्रेजों ने कर दी अपने कारखानों के लिए, मुकाबला नहीं कर सके हमारे दस्तकार मशीन के बने हुए सामान का, खत्म हो गए, सबने हल की हत्थी पकड़ी। आज 60 की बजाए 72 हैं खेती पर और दस्तकारी या उद्योग धन्धों में 25 की बजाय रह गये 10। तो मुल्क गरीब हो गया। मैं किसानों के खेतों की पैदावार बढ़ाने की बात करता हूं, उसके बिना देश का काम नहीं चलेगा। लेकिन साथ ही किसानों ये बता देना चाहता हूं कि जिस मुल्क में किसानों की तादाद ज्यादा होगी और दूसरा पेशा करने वालों की तादाद कम होगी, वो मुल्क गरीब होगा। दूसरा पेशा करने वालों की तादाद बढ़नी चाहिए, उतना ही मुल्क मालदार होगा।

तो मतलब ये हुआ मेरे बताने का कि खेत की पैदावार फी बीघे से बढ़ानी है लेकिन खेत पर काम करने वाले लड़कों की तादाद घटानी है और दूसरा पेशा करने वाले लोगों की तादाद बढ़ानी है। ये ही नुस्खा है और कोई नुस्खा और गुण नहीं है गरीब देश को मालदार बनाने का। फिर दोहराए देता हूं, खेत की पैदावार फी बीघे बढ़ानी है। खेत पर काम करने वाले लोगों की तादाद घटानी है और ये लड़के खेती से उठकर, इन सब को दूसरा कोई न कोई दूसरा पेशा करना चाहिए, तब जाकर के ये देश मालदार होगा।

अब आप ये कहोगे, आपके मन में ये सवाल उठेगा कि साहब, हमारे पास तो जमीन कम है हमको रोजगार दिला दीजिए, हम दूसरे रोजगार में जाएंगे। इसकी बाबत –– क्यों भई ! क्या बात है, आप लोग बात न करो, बात न कीजिए – बिल्कुल ध्यान से बात सुनिए, जो ना सुनना चाहें, वो जा सकता है खामोशी से– लेकिन बात आपको सुननी पड़ेगी – मेरा मन

नहीं लगेगा, आपका मन भी नहीं लगेगा। .. तो, मैं आपसे कह रहा था ध्यान से बात सुनो! कि, मैं कोई पेशा नहीं दिलवा सकता। पेशे अपने आप, जब बढ़ेंगे जब पहले खेत की पैदावार बढ़े। अब खेत की पैदावार कैसे बढ़ेगी ? रकबा तो बढ़ नहीं सकता और खेत पर काम करने वाले लोगों की तादाद घटाना चाहते हैं और फिर खेत की पैदावार फी बीघे बढ़ाना चाहते हैं तो दो ही रास्ते हैं– कि उसमें पानी खूब दिया जाए, सिचांई का प्रबन्ध किया जाए, खाद अच्छा दिया जाए, बीज अच्छा दिया जाए और खेती का हुनर अच्छा किया जाए। ये ही दो रास्ते हैं और कोई रास्ता नहीं।

अब जब अंग्रेज गया था, तो 100 में साढ़े सत्रह बीघे में खेत –– उसका प्रबंध था, क्या नाम है – पानी का, सिंचाई का। अब 30 साल के स्वराज के बाद 25 फीसदी में। आज सूखा पड़ी हुई है, उत्तर प्रदेश में और जो आपके पड़ोस में है, राजस्थान में है और मध्य प्रदेश में, या और भी बहुत से सूबों में है, हरियाणे में भी या पंजाब में भी। लेकिन पंजाब में असर कम हुआ। क्यों ? वहॉ 100 में 80 बीघे में सिंचाई का प्रबन्ध है। 100 में 80 बीघे में। तो, वे इस सूखा को बर्दाश्त कर गये। तुम्हारे सूबे में मेरे ख्याल से 100 में 15 होगा ? (पीछे से आवाज आती है, 8) 100 में 8। तो गवर्नमेंट का फर्ज ये था 8 की बजाए 16, 16 के बजाए 25 के बजाए 35 बीघे में अगर, इन्तजाम कर देती 100 के पीछे, तो सूखा चाहे 2 साल तक पड़ी रहे, तुम लोग भूखे न मरते, हिन्दुस्तान के लोग भूखा न मरते। ..... तालियां ....

लेकिन हमारे लीडरों ने क्या किया ? गांधी जी की बात को नहीं माना। गांधी कहता था खेत की पैदावर पर जोर दो। गांधी बड़े घर में पैदा हुआ था। लेकिन झोंपड़ा डालकर एक गांव में, 'सेवा ग्राम', उसमें बैठ गया था वो झोंपड़ी उनकी अब तक वहीं है। इसलिए, गरीब की बात वह जानता था। हमारे लीडरों ने ये किया कि बड़े–बड़े कारखाने बनाओ, कुछ थोड़े से बेशक जरूरी थे, लेकिन बहुत से गैर जरूरी तौर पर बना लिए। रूपया बाहर से कर्जा लो, अपने देश वालों पर टैक्स लगाओ और खेती की बजाए बड़े कारखानों पर जोर लगाओ।

सरदार पटेल था, किसान का बेटा। पांच भाई थे। दस एकड़ जमीन थी। पांच भाई। इनका नम्बर था तीसरा। जब मिडिल पास कर लिया, तो बाप ने कहा कि खेती करो, मेरे पास पैसा नहीं है तुम्हें पढ़ाने के लिए, आगे। तो, दो साल तक सरदार पटेल ने अपने बचपन में, जवानी में हल चलाया। उसके बाद बाप ने अंग्रेजी पढ़ने भेजा। बड़े भाई थे विट्ठल भाई वो कुछ कमाने लगे। तब छोटे भाई को पढ़ने भेजा। तो, वो हमारा लीडर हुआ। हमारा गृह मंत्री हुआ। उसने सब राज–पाटों को खत्म करके हिन्दुस्तान में मिला दिया और अगर वो नहीं होता, तो हमारे और लीडर तो व्याख्यान देते रहते, लेकिन मुल्क को संगठित नहीं कर सकते थे।

तो, पहली योजना, ये जो पंचवर्षीय योजनाओं का तुमने नाम सुना, उनके जमाने में बने, जिसमें अरबों रूपया लगाया गया। तो सरदार पटेल ने अपने अर्थशास्त्रियों से कहा के 100 में 37 रुपये खेती की पैदावार बढ़ाने के लिए रखें और 100 में 5 रखें बड़े कारखानों के लिए।

इस बीच में महात्मा भी हमसे चले गए। सरदार पटेल भी चले गए। दूसरी योजना जो सन् 56 में तैयार हुई तो उसमें खेती का विकास 37 से घटाकर 18 कर दिया गया। कारखाने का रुपया 5 से बढ़ाकर 24 कर दिया गया। अब जिस पेशे में 100 में 72 आदमी लगे हुए, उस पेशे के विकास के लिए 18–20 रुपया और जिस पेशे में 10 लगे हुए, उसके विकास के

लिए 24 रुपया। बिजली में बहुत रुपया लगा, वो भी खेती में बहुत कम, बड़े–बड़े कारखानों पे लगा और खर्च हुई ज्यादातर बिजली बड़े कारखानों में। कारखानेदारों से बिजली के दाम कम और ट्यूबवैल लगाने के लिए किसान बिजली लें, तो उसके दाम ज्यादा। – तालियां ..... ये हुआ किसान के साथ बर्ताव। इससे खेत की पैदावार नहीं बढ़ी।

और गांववालों मैं कहता हूं कि गफलत हो गई और देश की ये हालत हो गई। दूसरे पेशे बढ़ने चाहिए मैंने आपसे ये कहा था। लेकिन, दूसरे पेशे – मैं चाहता हूं – ध्यान से मेरी बात को पल्ले गांठ बांध के चलें जाएं, दूसरे पेशे तभी बढ़ेंगे जब कि किसान बाजार में कोई माल बेचे। अगर किसान की इतनी पैदावार हो कि अपनी जरूरत का गेहूं और चावल घर पर रख के बाकी बाजार में बेचे, तो दुकानदार बढ़ेंगे और इनके पास पैसा आएगा। कोई सामान अपने बहू–बेटी के लिए, बच्चे के लिए, स्कूल और कालेज में पढ़ता होगा, उसको साइकिल भी, घड़ी भी, कपड़े भी, जूते भी, किताब खरीदने के लिए पैसे की जरूरत होगी, वो पैसे से खरीदेगा। तो, इन चीजों को बनाने के लिए अपने आप छोटी–बड़ी मशीन लग जाएगी। दियासलाई के लिए भी, साबुन के लिए, जूते के लिए जो पहले रोजगार करते थे हमारे मोची बनाते थे, गांव में ही जूता बनता था, अब तो बड़ी–बड़ी फैक्ट्री से बनकर जूता आता है।

तो, इन सबके काम करने वाले अपने आप पैदा हो जाएंगे और परमात्मा करे हमारे मुल्क के किसानों की दूनी पैदावार हो जाए। तो दूने दुकानदार हो जाएंगे, फिर उस माल को ढोने वाले ट्रक चलेंगे यहां से दूसरी जगह ले जाएंगे तुम्हारे खेत की पैदावार को, जहां वो नहीं होती होगी। उसके बदले में जब किसान घड़ी, साइकिल, कपड़ा खरीदना चाहेगा तो घड़ी और साइकिल और घड़ी कहीं से लाएंगे, दूसरी जगह से और फिर तुम्हारे जिले के अन्दर, दतिया के अन्दर दुकान खुल जाएगी, उस सामान को बेचने के लिए, उसी किसान को जिसने अपनी पैदावार बेचकर जिसकी जेब में कुछ पैसा आया।

तो, तीन पेशे हैं बड़े खेती के अलावा। उनमें ही काम करने वालों की तादाद बढ़ेगी, जब देश की गरीबी मिटेगी। तिजारत, परिवहन और उद्योग–धन्धे। लेकिन ये तभी बढ़ते हैं जब कि पहले खेत की पैदावार बढ़ जाती है। अब मैं जो खेत की बात कह रहा हूं, किसानों की पैदावार की बात कह रहा हूं बराबर सन् 57 से मैं यही राग अलाप रहा हूं, मैं सारे देश में और सारे यू0पी0 में। तो मुझे लोग कहते हैं कि चरण सिंह शहर वालों के खिलाफ है, बनियों के खिलाफ है। नहीं। बनियों के खिलाफ नहीं, मैं शहरवालों के खिलाफ भी नहीं हूं, किसी के खिलाफ क्यों होता, मेरे लिए सारे देशवासी एक से हैं। लेकिन मेरा तजुर्बा ये बताता है– अब दुनिया का इतिहास यह बताता है कि जब किसान खुशहाल होता है, जब खेत की पैदावार बढ़ जाती है। तभी दूसरे पेशे बढ़ते हैं, तभी बनिये की दुकानदारी चलती है। वरना नहीं चलती और वो देश तरक्की नहीं करेगा। –– तालियां ––

अगर, तुम्हारे आस–पास के इलाकों की पैदावार दूनी हो जाए किसानों, तो मैं ये लिखे देता हूं कि 5 साल के अन्दर दतिया में रहने वाले लोगों को जो दूसरा पेशा करते हैं, जो कस्बे और शहर में रहते हैं उनकी आबादी दूनी हो जाएगी। अगर ये 25 हजार का कस्बा है मुझे नहीं मालूम दतिया छोटा ही होगा, मेरे ख्याल में 40 हजार का है, तो 10 साल के अन्दर एक लाख आदमियों का शहर हो जाएगा। अगर आसपास के किसानों की पैदावार दूनी हो गई। –– तालियां ––– हर तरह के काम करने वाले लड़के हैं और उधर ये किसानों के बेटे ही तो आएंगे। ये जो 40 से जब ये एक लाख बनेंगे, तो 60 हजार लोग कहां से आएंगे, वो

किसानों के बेटे आएंगे। आज इन पे जो दो–दो बीघे जमीन है इन पे चार बीघे हो जाएगी। इनकी जमीन का रकबा बढ़ेगा, इनकी खेती का। जमीन तो कहीं जानी नहीं है, आपस में ही बटनी है।

तो, जब मैं किसानों के खेतों की पैदावार बढ़ाने की की बात करता हूं तो देश की खुशहाली की बात करता हूं और जो रुपया इन पे आएगा, इन के पास रहेगा, नहीं रहेगा वो तो दुकानदार के यहां चला जाएगा, सामान खरीदने के लिए और दुकानदार के भी ये सब नहीं रहना, उसमें अधिक हिस्सा चला जाएगा, मशीन चलाने वाले और मोटर चलाने वालों पर और दस्तकारी करने वालों पर और उद्योग–धन्धें में लगे हुए। वो सारे देश में बटेगा।

तो, किसानों की खुशहाली में छिपी हुई है, गैर किसानों की और शहर वालों की खुशहाली। बिना गांव के खुशहाल हुए और बिना खेती की तरक्की किए, हमारा मुल्क तरक्की कर ही नहीं सकता, कर ही नहीं सकता दोस्तों। यह सीधी सी बात है। –– तालियां ––– सीधी सच्चाई है। इसको कोई इन्कार नहीं कर सकता। तो खेत का –– की तरफ से हमारे बहुत से लीडरों ने, नाम नहीं लेना चाहता हूं, उपेक्षा की और बर्बाद हो गया हिन्दुस्तान। और खर्बों का कर्जा लेकर हमने बाहर से अन्न मंगाया।

अच्छा अब दूसरी बात, जो महात्मा कहता था, वो कहना चाहता हूं। इशारा तो करता हूं दस्तकारी। अब जैसे कपड़ा हाथ से बन सकता है, चरखे से, करघे से, तो बड़े कारखाने लगाने की क्या जरूरत है। तो महात्मा को अकल नहीं थी कि क्या जो चरखा और करघे की बात हमसे कहता था। वो नहीं जानता था कि मशीन से बन सकता है। लेकिन वो ये कहते थे कि –– और गौरमेंट की एक रिपोर्ट है कि बड़े कारखानें में एक मजदूर जितना कपड़ा पैदा करता है, उस कपड़े को बनाने के लिए 12 आदमी चाहिए, करघे पर। तो आज 10 लाख आदमी टैक्सटाइल मिल में लगे हुए हैं, बड़े–बड़े कारखानें में –– बनाने में। अब एक आदमी मैं फिर दोहरा रहा हूं –– (अरे !) क्या बात है ? ये लड़कों – बैठो, इनसे कहो – बच्चों से, के ये बैठें और जाएं नहीं – अरे, तुम्हारी बात कह रहा हूं – आगे जो जा के अच्छा खाने को मिले तुम्हें) – तो मैं आपसे ये कह रहा था –– (अच्छा, तो बात सुना करो) – मैं ये कह रहा था कि अब मेरा इरादा है, अगर हमारी मैज्योरटी आ गई दिल्ली में और हमारी गवर्नमेंट बनी और मेरे सभी साथी राजी हुए और राजी इनको होना पड़ेगा, मेरे साथ – तो मैं बड़े–बड़े कारखाने, जो कपड़ा बना रहे हैं, इनको मेरा हुक्म होगा या आदेश होगा, गवर्नमेंट का, कि तुम हिन्दुस्तान के अन्दर कपड़ा नहीं बेच सकते, बाहर बेचो, यहां तो हाथ का बना हुआ कपड़ा बिकेगा। ––– तालियां ––

तो 10 लाख आदमी जो बड़े कारखनों में लगे हैं। इनकी बजाए एक करोड़ 20 लाख, 12 गुना आदमी लगेंगे – जो मारे–मारे गांव में फिरे हैं, भूखे पड़े हैं। जिनके पास एक बीघे जमीन है, 1 करोड़ 20 लाख, गवर्नमेंट को कर्जा देने की जरूरत नहीं। गवर्नमेंट को कोई तकनीकी ज्ञान देने की जरूरत नहीं, गवर्नमेंट को बिजली देने की जरूरत नहीं। और अपने आप 1 करोड़ 20 लाखों को बिना गवर्नमेंट के पूछकर ये ध्येय– लेकिन, हिम्मत हमको ये करनी पड़ेगी कि बिरला को नाराज करना पड़ेगा। बिरला का यहां टैक्सटाइल मिल है। हां, ग्वालियर में बिरला का एक कारखाना है और ये ना मालूम कितने बिरला हैं, 300–400 कारखाने हैं। अब एक कारखानेदार को नाराज करने की हिम्मत जिस लीडर में होगी, वही ये काम कर सकता है। कारखानों से जो रुपया लेता है वो वेतनधारी होता है। (तालियां)–

हमने जो पार्टी भारतीय क्रांतिदल बनाई थी, वो भारतीय लोकदल अब हो गया है। हमने अपने साथियों से कह दिया था कि हम बड़े कारखानेदार से रुपया नहीं लेंगे और ना उनके हाथ बिक जायेंगे। अगर हम उनसे रुपया लेकर इलैक्शन जीते और चीफ मिनिस्टर या प्राईम–मिनिस्टर या मिनिस्टर बने, तो हम पर उनका एहसान हो जाएगा। फिर हमारी गवर्नमेंट की नीतियां बड़े कारखानेदार के हित में होंगी, उसके हक में होंगी। हम गरीब आदमियों की बात तो करेंगे इलैक्शन के वक्त लेकिन दरअसल हमारी नीतियां बड़े आदमी के हक में होंगी, क्योंकि उनके पैसे के बल पर हम इलैक्शन में चुनकर आए। –– तालियां।

तो, इसीलिए मैंने अपने साथियों से, अब भी कह रखा है। मुझको रोज मेरे साथी कहते हैं कि चौधरी साहब रुपये का क्या होगा? दूसरी पार्टियों के पास, इंदिरा के पास और जगजीवन राम की पार्टी के पास और जनसंघवालों के पास करोड़ों रुपया है। कहां से आया ये पैसा ? मैंने कहा मैं नहीं जानता। मैंने यह तय किया हुआ है कि मेरी पार्टी की तरफ से किसी बेईमान आदमी को हम खड़ा नहीं करेंगे। बतलाये देता हूं। –– तालियां –– ईमानदार लड़के हमारे खड़े होंगे। तो तुम उनको पहचानोगे। तुम उसका खर्चा नहीं कराओ। थोड़ा बहुत जिसका बस चले, उसको दे भी सकोगे। लेकिन, अगर वो सेठ हैं। – । अब भी आते हैं, देने को कहते हैं। मैंने कहा नहीं मैं नहीं लेने के लिए तैयार। मुल्क तो ये हमेशा जिन्दा रहेगा, मुल्क बर्बाद हो चुका है, राजनीतिक लोगों की बेईमानी से और लालच के कारण और मुझे कितने बरस जिन्दा रहना है। मैं क्रियाशील पार्टी में राज चाहता था 2–4 साल और, 5–7 साल और, किस को अमर रहना है, सबको ही जाना है। मुल्क तो हमेशा रहेगा। फिर जिनको चुनकर आप लीडर बनाते हैं– प्राईम मिनिस्टर और चीफ मिनिस्टर बनाते हैं और वो रुपये के लालच में फंसकर सत्ता लाना चाहते हैं, तो ये देश नहीं उठेगा, उठेगा नहीं। उठने का सवाल नहीं –– ये देश डूब चुका है– दोस्तों! इसको बचाने का सवाल नहीं है कि डूबने जा रहा है बचाओ। डूब चुका है, इसको सालवेज करने का सवाल है, इसको समुद्र की तलहटी से निकालने का सवाल है इस वक्त। – तालियां।

खेत की पैदावार बढ़े, तो खाद पर जो टैक्स लगा हुआ था, खाद पर भी, जो दुनिया में खाद पर कोई टैक्स नहीं लगाता, लेकिन हमारे लीडरों ने खाद पर भी टैक्स लगा दिया था। कीमत भी वैसे उसकी ज्यादा थी, एक्साइज लगा दी, उसको मैंने आधा कर दिया। तो 1 करोड़ 5 लाख रुपये का किसानों को फायदा हुआ। तो शहर के जितने अखबार हैं सबने मेरे खिलाफ लिखना शुरू कर दिया। अब झूठी गढ़–गढ़ के बात लिखनी शुरू कर दी – क्यों ? क्योंकि बड़े पूंजीपतियों के अखबार हैं वो – पत्रकारों का दोष नहीं है। मैं एडीटर का और जर्नलिस्ट का दोष नहीं मानता, लेकिन मालिक जो है, जो नीति वो चाहता है, इन विचारों को उसको अमल करना पड़ता है। और चार बड़े जो अंग्रेजी अखबार निकलते हैं। हिन्दी के भी निकलते हैं उनके संस्करण दिल्ली में वो कौन हैं ? – इंडियन एक्सप्रेस गोयन्का का, टाईम्स ऑफ इंडिया साहूजैन का, हिन्दुस्तान टाइम्स और हिन्दुस्तान बिरला का, स्टेट्समैंन टाटा का ये सब जानते हैं कि यह आदमी न मालूम जंगली कहां से दिल्ली में आके मिनिस्टर हो गया है –– इसका काम तो हल चलाने का था। किसानों और बात समझ लो। तुम या तो हल चलाओ और जान लो या तुम्हारा बेटा कांस्टेबल पुलिस में हो सकता है, या फौज में जवान हो सकता है। हुकूमत करने का अख्तियार कुछ बिरादरियों को है, शहर के बड़े लोगों को है, तुमको हुकूमत में कोई हिस्सा मिलने का अधिकार नहीं। – तालियां।

तो उन्हें लगा कि ये किसान का बेटा है, जो किसान की बात करता है, खेती की बात करता है, गरीब की बात करता है, दस्तकार की बात करता है, बेरोजगारी की बात करता है, ये अजीब फैनीमॅनन् है, ये कहां से आ गया। तो आज सारे अखबार हमारे खिलाफ लिख रहे हैं। उन्हें यह भी डर है कि बड़े–बड़े कारखाने कुछ बन्द कर देगा। और मैंने कहा कि मैं उन कारखानों को बंद तो नहीं करना चाहता, लेकिन ये हुकुम जरूर दूंगा कि तुम अपना सामान बाहर भेजो, जो वो सामान भेज रहे हैं–– बना रहे हैं, जो छोटे–छोटे लोग हमारे गांव में काम कर सकते थे और जो करोड़ों आदमी बेरोजगार बन बैठा– पढ़ा लिखा – बे–पढ़ा लिखा, ताकि उनको रोजगार मिल जाये, इसलिए। तो इसलिए तरह–तरह के अखबारों में खबर छपती है।

मैं आपके इलाके में पहली बार आया हूं। नाम ज्यादा जानते नहीं और नाम थोड़ा–बहुत कहीं सुन लिया हो, लेकिन मेरे इलाके के लोग यू0पी0 के सारे लोग, इस बात को जानते हैं। तो मैं किसानों से यह कहता हूं – तुमसे भी यह कहता हूं कि जब तक अखबार मेरी बुराई करते रहें, तो समझ लेना कि मैं कोई काम तुम्हारे फायदे का कर रहा हूं। –– तालियां – और अगर इन्होंने मेरी तारीफ करनी शुरू कर दी तो ये विचारना– आपको पड़ेगा कि क्या गलती, कहीं चरण सिंह गलती तो नहीं कर रहा है। –– तालियां ––

और अब मैं बात को खत्म करता हूं। मैंने आपको चारों बातों का हल बता दिया कि गरीबी तब मिटेगी, जबकि खेत की पैदावार बढ़े और दूसरे पेशे बढ़ें। और बेरोजगारी तब मिटेगी और असमानता, जो गरीब और अमीर की आमदनी में फर्क बढ़ता जा रहा है वो तब मिटेगी जब बड़े कारखाने कम हों; जरूर हों कुछ, लेकिन कम हों, छोटी मशीन ज्यादा हों और दस्तकारी में ज्यादा लोग लगे हों। बेईमानी तब मिटेगी जबकि मिनिस्टर, चीफ मिनिस्टर और प्राईम मिनिस्टर ईमानदार हों। –– तालियां ––और ये ईमानदार तब ही रह सकेंगे, जब बड़े लोगों से इलैक्शन लड़ने के लिए ये रुपया न लें। वरना् बिक जायेंगे बड़े लोगों के हाथ।

तो यह हमारी पार्टी कर सकती है और नहीं कर सकतीं। और वो कर सकें – गरीबी कौन मिटायेगा ? –– (देखो– बात न करो– ए बेटी बात ना करो) गरीबी कौन मिटायेगा ? जिसने गरीबी देखी हो। जिसने गरीबी देखी नहीं है, वो गरीबी कैसे मिटायेगा, उसको तो पता ही नहीं कि गरीबी किसे कहते हैं। जो ऐयाश और ऐयाशी में पैदा हुआ है, जो बड़े–बड़े महलों मे पैदा हुआ है, जिनके पास तरह–तरह के ऐश और इशरत के सामान मौजूद हैं, जिनके यहां कारें मौजूद हैं, जिनकी बहू–बेटियां सेज से नीचे पैर नहीं रखती हैं, वो गरीबी मिटायेंगे ? नहीं। वो नेक–नीयत होते हुए भी उनको सच्चा ईमानदारी से भी वो अगर देश को उठाना चाहते हैं, अब मैं अपने बड़े लीडरों को नहीं कहता हूं कि उठाना कोई नहीं चाहता था, या उठाना नहीं चाहते हैं – नहीं। उठाना चाहते हैं लेकिन वो शहर में पैदा हुए हैं। बड़े घरों में, देश रहता है गांव में, गरीबी में। तो उनको गांव के लोगों की समस्याएं नहीं मालूम हैं। इंदिरा अगर आ जाये तो उससे ये पूछना कि भैंस और गाय में क्या फर्क है, तो बता नहीं सकेगी वो। –– तालियां –– बिना दिखाये पूछना, भैंस गाय खड़ी कर दी सामने, तो बता देगी ? लेकिन वैसे पूछना कि हम दिखाते नहीं, ये बता दो कि भैंस में और गाय में ये फर्क होता है, बता नहीं सकती। ये पूछना कि एक बीघे जमीन कितने फर्लांग लम्बी और कितने फर्लांग चौड़ी होती है। ये भी नहीं बता सकती। कुछ नहीं बता सकती। उसको ये भी नहीं मालूम है कि हमारे चूल्हे कैसे होते हैं। हमारी बहू–बेटियों की जवानी और सौन्दर्य तीन साल में खत्म

हो जाती है उन चूल्हों को झोंकते–झोंकते। क्यों ? चूल्हे अब तक क्यों नहीं सुधर पाये हैं, और छोड़ो। सबसे ज्यादा शर्म की बात कि देश को 30 साल आजाद होने के बाद हमारी बहू–बेटियों को जंगल में बड़ी बेशर्मी के साथ शौचालय जाना पड़ता है, आज भी। क्यों ? हमने देखा है सड़कों पर, हम खुद अपने घर की बात कहते हैं। अपनी माता की और अपनी बहन की बात कहते हैं। हम गांव के – अपने सभी लोगों की बात जानते हैं कि किस तरह बाहर वो बैठती हैं जाकर के । क्यों ? क्यों ये हुआ ? क्या आज तक ये नहीं हो सकता था कि लड़कों के लिए, मर्दों के लिए नहीं, तो बहू–बेटियों के लिए कम –से–कम घर–घर में नहीं, तो गांव के बाहर शौचालय का इन्तजाम हो जाता। लेकिन किसको फिकर पड़ी है – दोस्तों ! किसको फिकर पड़ी है। जिनके हाथ में लीडरशिप नहीं है – चुन के उनको तो तुमने एम0एल0ए0, एम0पी0 भेज दिया। लेकिन जिनके हाथ में नीतियां बनानी हैं, बनाने का हक था, जो लीडरान थे, उनकी बहू–बेटी को बाहर नहीं जाना पड़ता था। उनको तो फ्लैश मिला हुआ था। तो उन्हें तुम्हारी तकलीफों का क्या पता– क्या पता। ये बताओ जरा। ये है सवाल। मैं ज्यादा इसमें जाना नहीं चाहता हूं।

मैंने आज अखबार में पढ़ा है–राजमाता, जो यहां की ग्वालियर की, उनकी मैं बड़ी इज्जत करता हूं, बहुत अच्छी देवी हैं। वो हमारे मुखालिफ हैं, वो जनसंघ में हैं, वो बात रही अलग। लेकिन बहुत अच्छी देवी महिला हैं। आज अखबार में पढ़ रहा था अभी जब मैं उतरा यहां से – एरोड्रम पे– इस पे– क्या नाम है –– ग्वालियर में तो एक अखबार दिख गया। मैंने उसमें पढ़ा कि कैसे जनता पार्टी गिरी, सत्तालोलुप आदमियों ने गिराई – नहीं ! उन लोगों ने गिराई जो कि – जिन्होंने पार्टी बनाई, उनको निकाल दिया, जिन लोगों ने। तीनों हमारे चीफ मिनिस्टर हटा दिए – हरियाणे के, यू0पी0, के और बिहार के। हमारे तीनों गरीब आदमी थे। दो किसान के बेटे और एक नाई का बेटा था चीफ मिनिस्टर हमारा बिहार का। –– तालियां –– पर पूरे ठाकुर और इतना त्यागी आदमी कि, जिसका बाप आज भी गांव में नाई का ही काम करता है। – तालियां – मगर, नाई को और किसान के लड़कों को चीफ मिनिस्टर बनने का अधिकार नहीं – नहीं, इनको नहीं है। सब हटाए मोरारजी ने। और मोरारजी की कोई हैसियत नहीं थी, कोई असर नहीं था।

मैं जानता था कि मेरी और इसकी राय नहीं मिलेगी। लेकिन जनसंघ के नेता मेरे पास– जब बीमार में पड़ा हुआ था, इलैक्शन के बाद और सोशलिस्ट पार्टी के नेता, जो गरीबों का हमदर्द होने का दावा भरते हैं, सोशलिज्म–सोशलिज्म, समाजवाद के रोज नारे लगाते रहे। एन0जी0 गोरे, अटल बिहारी वाजपेयी मेरे पास 23 मार्च, 77 को पहुंचे, जब मैं अस्पताल में था– बीमार था, इलेक्शन के बाद से। और मुझसे कहते हैं कि हम जगजीवन राम को बनाना चाहते हैं प्राईम मिनिस्टर। मैंने कहा – क्यों ? मैं – ज्यादा बात नहीं कहना चाहता हूं। उनके प्राइवेट जीवन की बात नहीं कहना चाहता हूं। लेकिन उन्होंने प्रस्ताव पेश किया। था इमरजेंसी लादने का, 21 जुलाई, 75 को, जबकि वो गृह मंत्री नहीं थे। उनके लिए लाजमी नहीं था और जब उनको टिकिट मिलने की उम्मीद नहीं रही, तो छोड़ के एक सी0एफ0डी0 पार्टी बना ली, जनता पार्टी में नहीं आए। तो आप ईनाम देना चाहते हैं। मैंने कहा अटल बिहारी वाजपेयी उस आदमी को ईनाम देना चाहते हैं, क्योंकि उसने प्रस्ताव पेश किया था इमरजेंसी का। और 150 आदमी कांग्रेस के फिर भी जीत के आए हैं। अगर आप एमरजेंसी की बुराई करोगे, तो वो कहेंगे कि आपको क्या मुंह आया है, आपने तो प्राइम मिनिस्टर उस

आदमी को बनाया है, जो कल कांग्रेस में शामिल था और जिसने पेश किया था प्रस्ताव। मैंने कहा कि दूसरी बात का इशारा करें देता हूं, मैंने कहा वाजपेयी साहब, आप बड़ी हिन्दू–संस्कृति का नाम लेते हैं। हिन्दू संस्कृति यही कहती है कि इस तरह के लोगों को प्राइम मिनिस्टर बनाया जाये तब देश बढ़ेगा, तब देश बनेगा। तो मैंने कहा कि नहीं ! मैं उनके साथ नहीं हूं, जगजीवन राम के लिए। इससे तो मैं पसन्द कर लूंगा – उसको, मोरारजी देसाई को। अगरचे ये पूंजीपति उनके नजदीक हैं, गरीब और किसान से उनका भी मतलब नहीं है। लेकिन मैं कम–से–कम दो गुण उनमें देखता हूं कि 19 महीने जेलखाने में रहे हैं और मुझसे उमर में बड़े हैं, तो मैं उनको तो स्वीकार कर लूगा एक बार को। लेकिन जगजीवन राम को नहीं।

मैंने चिट्ठी लिखी आचार्य कृपलानी को और जय प्रकाश नारायण को कि मेरी और मेरे साथियों की सब की वोट है मोरारजी के लिए। इस तरह से यह सब हुआ, बाद में जगजीवन राम ने देखा कि ये आदमी मेरे आड़े आ गया, प्राईम मिनिस्टर बनने में। फिर कितना झूठा प्रचार हमारे खिलाफ हुआ कि हरिजनों का दुश्मन है चरण सिंह। नहीं। मैं दुश्मन उन गरीबों का नहीं, मैंने उनके लिए इतना काम किया जो किसी मिनिस्टर या चीफ मिनिस्टर ने भी नहीं किया। लेकिन अभी मेरे पास समय नहीं। और ये डिक्टेटर हो गया। इन्होंने कहा कि चरण सिंह बहुत शक्तिशाली आदमी दिखाई देता है। जब मेरे जनम दिन पर 25 लाख आदमी इकट्ठे हो गए– यू0पी0 दिल्ली में किसान, गांव के दूर–दूर से बिहार से, उड़ीसा से और आन्ध्र प्रदेश से, बांधों तो 50 लाख हुए संगठन पर और इनको बुलाया गया शुभकामनाएं देने को। नहीं, आए वादा कर कर और एक आध, मैं –– ऐसे –– उनको संयोजनों को पसन्द नहीं करता हूं, इस तरह की योजनाओं को । क्यों ? अब मेरे पास – मैंने तो मना किया था राजनारायण नहीं माने कि हम सम्मेलन बनाएंगे आपके जनम दिन को मनाएंगे। तो गांव के गरीब आदमी आये थे मेरा जन्म दिन मनाने और शहर का कोई टाटा–बिरला के रूप में नहीं आते मेरे पास, न उनकी कारें आतीं। नहीं तो मोरारजी के पास ही मैं बैठता था वहां लोकसभा में, क्योंकि मेरा दूसरा नम्बर था उनके बाद, उम्र के लिहाज से, हर लिहाज से, पार्टी तो मैंने बनाई थी, तो सब मुखालिफ थे, जब जेल में डाल दिए गए, तब वो राजी हुए थे जाकर के। मुझसे ये नहीं कहा मोरारजी ने कि चरण सिंह मेरी शुभकामनाएं, परमात्मा करे तुम सौ वर्ष जिन्दा रहो। नो। ऐसा छोटा आदमी है वो।

सांप लोट गया 25 लाख आदमियों की भीड़ को देखकर, ईर्ष्या का सांप लोट गया और तय किया कि चरण सिंह बहुत शक्तिशाली आदमी है। जनसंघ ने और उन्होंने, दोनों ने मिलकर हमको – मुझको, राजनाराण को हटाया। तीनों चीफ मिनिस्टर हटाए, और जो इलैक्शन कमेटी रखी गई, उसमें हमारे लोगों को नहीं रखा। मिनिस्ट्री से हटाओ, आगे चुनाव जनता पार्टी का बनेगा, उसमें मिलाओ। क्यों तोड़नी पड़ी ये ? कहते हैं कि दल–बदल । बेईमान लोग हैं जो दल–बदल कहते हैं। खुद कानून जो बनाया है, जो मई सन् 79 में पेश हो गया। एन्टी डिफैक्शन बिल। अब मेरी ही अध्यक्षता में होम मिनिस्टर होने के नाते, कमेटी बनी थी कि बिल बने। इस तरह के लोग जो दूसरी पार्टी में जाएं, तो वो ना जा सकें। तो उसमें लिखा है कि अगर चौथाई आदमी से कम छोड़ेंगे पार्टी को, तो डिफैक्शन माना जाएगा। चौथाई या चौथाई से ज्यादा छाड़ेंगे, डिफैक्शन नहीं माना जाएगा। हमने 299 में से 97 में एक तिहाई आदमी ने छोड़ा, कैसे डिफैक्शन है? और फिर जब राज नारायण को निकाल दिया,

राज नारायण पार्टी छोड़कर चले गए, तो 26 जून सन् 79 को एक पत्रकार सम्मेलन में पत्रकारों ने कहा कि महाराज राजनाराण जी छोड़कर चले गए हैं, जबकि आपने जनता पार्टी के – जनसंघ के सौ आदमियों को नहीं निकाला, जिन्होंने कि अपने चीफ मिनिस्टर के खिलाफ, बनारसी दास के खिलाफ यू0पी0 में सदन में वोट दी थी, उनके खिलाफ आपने कोई कार्यवाही नहीं की। राजनाराण जी को निकाला। अतः अगर पुराने लोकदल के आदमी चले गए, तो क्या होगा ? तो उन्होंने कहा – चले जाएं, चले जाएं – पार्टी और मजबूत हो जाएगी, गवर्नमेंट और मजबूत हो जाएगी। –– शोर –– मुझसे मेरे साथियों ने कहा कि चौधरी साहब अन्त हो चुका है, अब हमारे बस का रहना नहीं। मैं उनको रोक नहीं पाया।

वो बेईमान लोग, जो हम पे चार्ज लगाते हैं जो कि पार्टी बनने के आखिरी दिन तक खिलाफ था, ये मोरारजी देसाई और जब मेरे ऊपर कातिलाना हमला होता है – दोस्तों। 24 जनवरी, दिसम्बर को, 23 दिसम्बर को, मैं ... 24 को एक आदमी आया था, बिहार का आता है और जगजीवन राम जी की बिरादरी का आदमी आता है। मैंने अखबार वालों से कहा कि इसकी बिरादरी मत लिखना। मेरी उससे कोई रंजिश नहीं है। मैं उसको जानता नहीं था, वो पागल नहीं है, पढ़ा–लिखा आदमी था, वो षडयंत्र था। लेकिन मैंने अखबारों में ये चीज जाने नहीं दी। उस वक्त भी मोरारजी, मुझको एक लैटर भी नहीं लिखता है, मुझको फोन पर भी नहीं कहता है कि चरण सिंह तुम बच गए भईया, परमात्मा ने बड़ी कृपा की। नहीं! ऐसे छोटे आदमी को मैंने बनवा दिया था प्राईम मिनिस्टर। मैं क्या कहूं, आप लोगों से ? ऐसा ही चन्द्रशेखर बकवास करता फिरता है कि हम किसी को नहीं लेंगे, जो लोकदल में चले गए हैं। मैंने पूछा – ऐ ईमानदार आदमी, कौन आदमी जाना चाहता है आपकी पार्टी में से लोकदल का। कौन जाना चाहता है ? कैसे ये प्रचार कर रहे हो? क्या–क्या मनवाना चाहते हो? हरगिज–हरगिज नहीं। –– तालियां –। इसके गांव में जो चले जाओ, सिकन्दर पुर में, तो महल बने पाओगे, दो साल के अन्दर, महल बन गया। लाखों–लाखों रूपये के, वो कहां से बने? पूछना।

और जगजीवन राम कहते हैं कि क्योंकि मैं हरिजन था, इसलिए प्रैजीडेंट ने नहीं बुलाया। नहीं! हमारी वोट ज्यादा थी, इसलिए उन्होंने हमको बुलाया। और जगजीवन राम गरीब घर में पैदा तो हुआ है लेकिन आज हिन्दुस्तान के बड़े–बड़े मालदार लोगों में उसकी शुमार है। –– तालियां ––

आप समझ गए –– नहीं समझ रहे बात को, समझ रहे नहीं – किसानों! हां, तो ये ऐसे लोगों से – ये देश को उठायेंगे। जो ये पार्टियां हैं, इनके लीडरों पर नजर डालो। उनके चरित्र देखो, उनकी ईमानदारी देखो, उनके कारनामे देखो, और यह आपको बता देना चाहता हूं– किसानों, के जो चरित्र है– उसके दो हिस्से नहीं होते, कि प्राइवेट चरित्र और, और पब्लिक चरित्र और। चरित्र एक होता है। अगर प्राइवेट लाईफ में आदमी चरित्रहीन है, बेईमान है तो मिनिस्टर और प्राईम मिनिस्टर होकर भी ईमानदार और चरित्रवान नहीं रहेगा, देश को डुबो देगा एक–न–एक दिन। –– तालियां –– ये गांधी ने हमको सिखाया है।

इन शब्दों के साथ आपको धन्यवाद देता हूं, बहुत शांति से मेरी बात सुनी। अन्त में मैं दो–तीन नारे लगाना चाहता हूं। नारे साथ में लगा देना, अगर जी चाहे और फिर मैं आपसे इजाजत चाहूंगा जाने की।

भारतमाता की जय,

भारतमाता की जय।
महात्मा गांधी की जय,
महात्मा गांधी की जय।
लोकदल कांग्रेस की जय,
लोकदल कांग्रेस की जय।

———————————